Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषा और संस्कृति

Dr. Arti Kumari*

Associate Professor, Department of Philosophy, B. N. College, TMBU, Bhagalpur

सार – *भूमंडलीकरण एक ऐसी बाजार आधारित व्यवस्था है जो पश्चिम के संपन्न देशों को विश्व के बाजार में अपनी पैठ बनाने का अवसर प्रदान करती है। यूं तो इसका उद्देश्य विश्व के देशों को अपने उत्पादों के लिए व्यापक बाजार उपलब्ध कराना रहा है परंतु इस व्यवस्था का लाभ चुने हुए संपन्न देशों तक ही सीमित रहा है। धीरे धीरे इसने अपनी परिधि का आयत्त कर बाजारवाद के दायरे से बाहर निकल भाषा और संस्कृति की सीमाओं में भी घुसपैठ करना आरंभ कर दिया है। इसके प्रभाव से नैतिक मूल्यों में तेजी से क्षरण हुआ है। इसने भारत की महान सांस्कृतिक विरासत की नींव हिला दी है। भारतीय संस्कृति के प्राचीन मान हाशिए पर आ गए हैं। मूल्यों एवं आदर्शों में लोगों की आस्था कम होती जा रही है। कमोबेश यही स्थिति भारतीय भाषाओं की भी है।एक सोची-समझी रणनीति के अंतर्गत भाषा और संस्कृति के महान दुर्ग को धराशाई करने का प्रयास किया जा रहा है। संस्कृति के लिए यह समय काफी चुनौतीपूर्ण है। भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के लिए यह कोई नया अनुभव नहीं है। पूर्व में भी इसने ऐसे अनेकों झंझावातों को झेला है तथा उन चुनौतियों का बखुबी सामना कर अपनी सफलता के परचम लहराए हैं। इसकी पूरी संभावना है कि इस अग्नि परीक्षा में भी वे सफल होंगी तथा बाजारवादी ताकतों को मुंह की खानी होगी। हमारी पहचान एवं अस्मिता भाषा एवं संस्कृति से ही जुड़ी हुई है। बाहरी चमक दमक के वशीभूत होकर अपनी जड़ों से दूर होना हमारे लिए आत्मघाती होगा।*

मुख्य शब्द — *भूमंडलीकरण, आयातीत, प्राथमिकता, संस्कृति, विरासत, उपेक्षित, अस्तित्व, चुनौती, ब्यामोह, परिवेश, अवरोध, अवधारणा, संभावना, पृष्ठभूमि, मूल्य, आदर्श*

----------X----------

प्रस्तावना

भूमंडलीकरण के दौर में पश्चिम से आयातित भाषा और संस्कृति का जिस तेजी से विस्तार हुआ है उससे भारतीय भाषा और संस्कृति के समक्ष अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो गया है। भौतिकता के प्रति आग्रह के कारण नैतिक मूल्यों में लोगों की आस्था कम हुई है। युगीन परिवेश के अनुरूप मानवीय संबंधों की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है। पश्चिम द्वारा अनुमोदित लिव इन रिलेशनशिप जैसे अनैतिक संबंधों को हाथों हाथ लिया जा रहा है। महानगरों में पाश्चात्य जीवनशैली के प्रति लोगों का बढ़ता व्यामोह चिंता का विषय बन गया है। भारतीय भाषा और संस्कृति के भविष्य को लेकर तरह–2 के कयास लगाए जा रहे हैं। भारतीय जीवन मूल्य एवं आदर्श मुख्यधारा से अलग हटकर अपनी पहचान खो रहे हैं। उनके प्रति समाज में, विशेषकर युवा वर्ग में, उपेक्षा का भाव रोंगटे खड़े कर देता है। अपने ही देश में यह स्वयं को उपेक्षित एवं वंचित महसूस कर रही है। प्रश्न उठता है कि क्या भारतीय भाषा एवं संस्कृति इन झंझावातों से उबर कर अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम रख पाएगी? क्या बदली हुई परिस्थितियों में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण रख पाएंगे? क्या भूमंडलीकरण से उत्पन्न परिस्थितियों से निपटने में भारतीय भाषाएं कोई नवीन संभावना तलाश पाएंगी? क्या तेजी से उभरती नवीन विश्व व्यवस्था में हिंदी भाषा और संस्कृति अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कर पाएंगे? उभरते हुए समीकरणों के बीच हिंदी भाषा और संस्कृति की चुनौतियां बढ़ी हैं। गुलामी के दौर में भी अपनी स्वतंत्र पहचान कायम रखने के लिए इन्हें इतनी जद्दोजहद नहीं करनी पड़ी थी। इनके अस्तित्व पर इतना बड़ा संकट शायद ही कभी महसूस किया गया हो। अगर हम इतिहास के पन्नों को पलटें तो पाते हैं कि संघर्ष हिंदी की नियति बन गई है। इसका संपूर्ण इतिहास इन्हीं चुनौतियों एवं संघर्ष की घटनाओं से भरा पड़ा है। इस तरह की चुनौतियां इसके लिए रोजमर्रा की बातें बन गई हैं। चुनौतियों से इसका चोली -दामन का संबंध रहा है लेकिन इन चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर वह आग में तपकर कुंदन की तरह हमेशा से बाहर आई है। गुलामी के दौर में भी हिंदी भाषा और संस्कृति को शासक-वर्ग की घोर

www.ignited.in

उपेक्षा का शिकार बनना पड़ा था। इसके अस्तित्व को समाप्त करने के लिए एकाधिक हथकंडे अपनाए गए। इन षड्यंत्रो से आहत हुए बिना वह अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती रही। अंग्रेजी भाषा को उस पर तरजीह दी गई तथा उसे जबरन लोगों पर थोपा गया तथा हिंदी भाषा के समानांतर उसकी सत्ता कायम करने का कुचक्र रचा गया। भारतीय संस्कृति से जुड़े तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया तथा उसकी नवीन व्याख्या प्रस्तुत की गई। मैक्स मूलर द्वारा रामायण एवं महाभारत एवं अन्य क्लासिकल रचनाओं के काल निर्धारण में अपनाएं गए मापदंडों में संदेह की पूरी गुंजाइश बनती है। उसी तरह एसप (Aesop) के फेबल्स को पंचतंत्र से पूर्व की रचना घोषित किया गया। हिंदी को औसत भाषा का दर्जा प्रदान किया गया तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास में बाधक बताकर इसके विरुद्ध उन्हें खड़े होने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इन सारे विरोधों के बावजूद हिंदी भाषा एवं संस्कृति के विकास की रफ्तार प्रभावित नहीं हुई। सच्चाई तो यह है कि उस दौर में हिंदी भाषा की जितनी प्रगति हुई, उसका प्रचार प्रसार हुआ, आजादी के बाद उसमें कमी आई है। कई विश्व हिंदी सम्मेलनो के सफल आयोजन के बावजूद विश्व की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल हिंदी संयुक्त राष्ट्र की भाषा नहीं बन पाई। हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा उसी दौर में प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, विनोबाभावे एवं गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे मनीषियों ने राष्ट्रभाषा के लिए अपेक्षित मापदंडों पर हिंदी को ही खरा पाया तथा संपर्क भाषा के रूप में उसकी पुरजोर वकालत की। हिंदी ही एक ऐसी भाषा के रूप में उभर कर आई जो राष्ट्रभाषा के लिए अपेक्षित शर्तों को पूरा करती हो। उस दौर में देश में राष्ट्रीयता की अलख जलाने में हिंदी की निर्णायक भूमिका रही। हिंदी में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं उदंड मार्तंड, अमृत बाजार पत्रिका, हरिजन एवं सरस्वती आदि में प्रकाशित लेखों ने हिंदी भाषा के अक्षय कोष की श्रीवृद्धि की तथा उसे विश्व भाषा के समक्ष ला खड़ा किया। हिंदी भाषा के विकास का सबसे बड़ा कारण भी संभवत: यही रहा कि उसने शासक वर्ग की भाषा बनने की चेष्टा नहीं की। रीतिकाल के राजाश्रित कवियों को अगर हटा दिया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि जनसाधारण का उसे भरपूर सहयोग मिला। आम आदमी की भाषा बन कर उसने न सिर्फ उसके दुख दर्द को बांटा बल्कि शासक वर्ग की दुरभिसधियो के विरुद्ध उसके विरोधी तेवर को स्वर् प्रदान किया तथा उसे एक मंच पर लाने के लिए अश्रांत श्रम किया। कश्मीर से कन्याकुमारी एवं गुजरात से असम तक फैले विशाल भौगोलिक भूखंड की वैचारिक गतिविधियों का वाहक बन कर उसने राष्ट्रीयता की बेल को पुष्पित एवं पल्लवित किया। हालांकिहिंदी की इस शक्ति का गोस्वामी तुलसीदास को भी परिज्ञान हो चुका था। रामचरितमानस में हिंदी के संबंध में किया गया उनका उद्घोष उसकी मिसाल है—

“भाषा बद्ध करब मैं सोई, मोरे मन प्रतीति अस होई।”[1]

जात-पात, रंगभेद, बोलचाल की दूरियां मिटाकर संपूर्ण भारत को हिंदी ने एकसूत्र में आबद्ध का दिया तथा वंचितों एवं परिव्राजको के लिए समाज की मुख्यधारा से जुड़ने का अवसर सुलभ कराया। भारतीय संस्कृति के लिए भी यह काफी बुरा दौर रहा। उसे हाशिए पर धकेलने के लिए अनेकों षड्यंत्र रचे गए। भारत को संपेरो एवं बाजीगरो का देश कह कर उसकी घोर उपेक्षा की गई।[2] पाणिनी, पतंजलि, व्यास, वाल्मीकि शंकराचार्य, कालिदास सूर एवं तुलसी को औसत दर्जे का रचनाकार प्रमाणित करने में कोई कसर नहीं उठा रखी गई। भारतीय संस्कृति को रूढ़िवादी एवं परंपरा निष्ठा कहकर उसकी तीखी आलोचना की गई। हालांकि वे भारतीय संस्कृति के चकाचौंध से अभिभूत हुए बिना भी नहीं रह सके। आश्रम व्यवस्था, निष्काम कर्म, अद्वैत दर्शन, बुध के मध्यम मार्ग एवं महात्मा गांधी के सत्य एवं अहिंसा के आगे नतमस्तक भी हुए। अंग्रेज विद्वान विलियम जोन्स, विल्सन, कनिंघम एवं ग्रियर्सन आदि ने भारतीय क्लासिकल ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद कर यूरोप के लोगों का भारत की महान संस्कृतिक विरासत से साक्षात्कार कराया। पतंजलि के योग ने तो पूरे विश्व में धूम मचा रखी है। हद तो तब हो गई जब गेटे एवं शॉपेनआवर प्रभृति जर्मन साहित्यकार कालिदास की शकुंतला का आस्वादन कर नृत्य करने लगे। इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मैक्समूलर, मैकडॉनल्ड, कीथ,बेवर, विंटरनिट्स आदि विद्वानों ने पश्चिम के देशों के सामने भारतीय संस्कृति का पिटारा खोल कर रख दिया। इन विवेचनों से स्पष्ट है कि विरोध एवं विपरीत परिस्थितियों ने हिंदी भाषा को शक्तिहीन न कर शक्ति संपन्न बनाया है। फिनिक्स की भांति अपने ही राख के ढेर से पुनर्जीवित होकर उसने अपनी क्षमता का लोहा मनवाया है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति ने अपने मूल में ‘बहुजन हिताय एवं बहुजन सुखाय ‘की भावना संजो रखी है। ‘वसुधैव कुटुंबकम ‘के इस आदर्श वाक्य को जीवन का मूलादर्श बनाकर ही भारतीय संस्कृति के विशाल प्रासाद की आधारशिला रखी गई है। इसके प्राचीर इतने मजबूत हैं कि ऊंचे से ऊंचे तूफान एवं झंझावात इसे हिला नहीं सकते। ठीक उसी प्रकार संस्कृत भाषा की उत्पत्ति शिव के नाद से हुई है। नाद में तल्लीन शिव के डमरू से अनु गूंजित ध्वनि से उद्भूत शब्दों से संस्कृत की ध्वनियों का विकास हुआ है जिसके कारण शिवत्व से सायुज्य होने के कारण इन्हें अमरत्व की प्राप्ति

हुई है ।संस्कृत से उद्भूत होने के कारण हिंदी को अमरत्व विरासत में मिला है। हिंदी भाषा उस वेगवती वन्या की तरह है जो मार्ग में आने वाले छोटे -बड़े अवरोधों को पीछे धकेलते हुए तेजी से अपने गंतव्य की ओर बढ़ जाती है। उन अवरोधों से वह आहत नहीं होती वरन इससे उसमें एक नवीन ऊर्जा का स्फुरण होता है जिससे उसे नवीन ऊंचाइयों का संस्पर्श करने में प्रचुर सहायता मिलती है। छोटे-बड़े अवरोधों से विचलित होकर वह अपना मार्ग नहीं बदलती। परंतु भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा और संस्कृति को नई परिस्थितियों से रूबरू होना पड़ रहा है। भूमंडलीकरण के दौर में परिस्थितियां कुछ अलग सी हैं। इसने बाजारवाद की अपेक्षाओं के अनुरूप एक नवीन जीवन शैली एवं संस्कृति विकसित की है जिसके प्रति महानगरों में आसक्ति बढ़ी है। युवा वर्ग इसे हाथों-हाथ ले रहा है। यह सब एक सोची-समझो रणनीति का हिस्सा है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात ही औपनिवेशिक शक्तियों ने अपने उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराने के लिए स्वदेशी अर्थव्यवस्था को आघात पहुंचाने की रणनीति अपनाई। भूमंडलीकरण उन्हीं नीतियों का परिष्कृत एवं परिवर्धित संस्करण है। पश्चिम के संपन्न देशों ने अपने व्यापारिक हितों की रक्षा एवं व्यापार की अपार संभावनाओं का सृजन करने के लिए भूमंडलीकरण की अवधारणा को मूर्त स्वरूप प्रदान किया है। सूचना तकनीकि एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हाल के वर्षों में आई जबरदस्त क्रांति ने इस अवधारणा को पंख लगा दिए जिसने खुले आसमान के एक छोर से दूसरे छोर तक व्यापारिक संभावनाएं तलाशने की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। भूमंडलीकरण ने पूरे विश्व को एक बाजार के रूप में परिणत कर दिया तथा विश्व के देशों के बीच अपनी उत्पादित वस्तुओं को इस बाजार के अनुरूप ढालने की होड़ सी लग गई। बाजार की अपेक्षाओं के अनुरूप खड़ा होने की जिजीविषा ने उनके बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित किया है। इसका प्रभाव बाजार तक ही सीमित नहीं रहा। जीवन के हर क्षेत्र में यह धीरे-धीरे घुसपैठ कर रहा है। चूकि इसके मूल में आत्मनिष्ठता, प्रतिस्पर्धा एवं अवसरवादिता रची-बसी है इसलिए इसके प्रभाव से सांस्कृतिक मूल्यों में व्यापक फेरबदल आना स्वाभाविक है। वैचारिक धरातल पर भी इनका प्रभाव स्पष्ट रूप से महसूस किया जा रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इस व्यवस्था का हिस्सा बनकर लोग गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। क्षणिक शारीरिक सुख की पूर्ति के लिए माननीय संबंधों को तार-तार किया जा रहा है। लोग अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। अनंत काल से प्रवहमान शाश्वत जीवन मूल्यों में उनकी आस्था नहीं रह गई है। भारतीय संस्कृति के प्राचीन मान हाशिए पर आ गए हैं। उनकी विश्वसनीयता खतरे में पड़ गई है। मानवीय संबंधों को नए परिप्रेक्ष्य एवं संदर्भ में परिभाषित किया जा रहा है। मुख्यधारा से कटकर व्यक्ति एक द्वीप का स्वरूप ग्रहण कर चुका है तथा उसकी सारी इच्छाएं, अनुभूतियां व्यक्तिगत सुख एवं राग-भोग तक सिमट गई हैं। यह स्थिति बहुत भयावह है तथा स्वस्थ समाज की स्थापित मान्यताओं का खुला उल्लंघन भी। दूसरों की समस्याओं से ना तो उसे कोई सरोकार रह गया है और ना उसके समाधान के लिए पर्याप्त अवकाश ही। भौतिकता में आकंठ डूबने के कारण वह मुख्यधारा से पूरी तरह से कट गया है। उसकी प्राथमिकताएं बदल गई हैं। मानवीय संवेदना को स्पंदित करने वाले विषय अब उसकी प्राथमिकताओं मैं शामिल नहीं है। नवीन युगबोध की अपेक्षाओं के अनुरूप उसने अपनी सोच में व्यापक फेरबदल कर अपनी पहचान ही बदल डाली है। पारंपरिक जीवन मूल्यों एवं आदर्शों में उसकी आस्था नहीं रह गई है। देसीपन की सोंधी खुशबू उसे रास नहीं आती। ढूंढने पर भी उसकी रचनाओं में यह नहीं मिलता। भूमंडलीकरण के प्रवाह में वह अपनी जड़ों से इतना दूर निकल आया है की चाह कर भी वहां वापस नहीं लौट सकता। स्वत: स्फुरित भावातिरेक की अपेक्षा बनावटीपन उसे ज्यादा रास आने लगा है। मशीन आधारित इस संस्कृति ने मनुष्य को पूरी तरह यंत्रवत एवं संवेदन शून्य बना दिया है। गुलामी के दौर में उसने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जो तत्परता दिखाई भूमंडलीकरण के दौर मे वह पूरी तरह प्रभावहीन होती जा रही है। वे पूरी तरह से उसके रंग में रंग गई हैं। भूमंडलीकरण से उत्पन्न परिस्थितियों का प्रभाव असकी रचनाओं की पंक्ति- पंक्ति में परिलक्षित होता है। उसने अपनी रचनाओं के शिल्प, कथ्य एवं शब्द- विन्यास भी नयी व्यवस्था की अपेक्षाओं के अनुरूप ढाल लिए है। बदले हुए स्वरूप में वे कहीं से भारतीय परंपरा की ध्वजवाहक नहीं दिखती।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' में संपूर्ण भारतीय संस्कृति को 4 युगों में समेटने का प्रयास किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि आर्यों के आगमन से लेकर यूरोपियनो के आक्रमण तक भारतीय संस्कृति ने चार क्रांतियां झेली जिसने सांस्कृतिक उत्थान की दिशा एवं दशा तय कर दी। पहली क्रांति आर्यों के भारत आगमन के समय हुई। आर्यों ने स्थानीय जातियों को अपनी सामरिक एवं मानसिक श्रेष्ठता का लोहा मनवाया तथा उनकी जीवन -शैली में व्यापक फेरबदल किया तथा जीने की नई राह दिखाई। भारतीय संस्कृति को नई ऊंचाइयों का संस्पर्श कराया। दूसरी क्रांति महात्मा बुद्ध एवं महावीर के काल में हुई। बुद्ध एवं महावीर ने कर्मकांड की तीव्र भर्त्सना की तथा सामाजिक भेदभाव को समाप्त कर समस्त आर्यावर्त को एक सूत्र में आबद्ध करने का विनम्र प्रयास किया। तीसरी क्रांति मुगलों के आगमन के दौरान हुई जिसने भारतीय

संस्कृति पर अपनी छाप छोड़ी। चौथी और अंतिम क्रांति यूरोपियनों के आक्रमण के दौरान हुई। उनके संपर्क में आकर भारतीय संस्कृति ने विज्ञान एवं तकनीक को आत्मसात किया। छुआछूत, जाति प्रथा एवं सती जैसी कुप्रथाओं कै उन्मूलन में भी इस काल में सफलता मिली। पुस्तक की भूमिका में दिनकर जी कहते हैं—

"उत्तर, दक्षिण, पूर्व एवं पश्चिम देश में जहां भी जो भी हिंदू बसते हैं उनकी संस्कृति एक है एवं भारत की प्रत्येक क्षेत्रीय विशेषता हमारी इसी सामासिक संस्कृति की विशेषता है। तब हिंदू या मुसलमान हैं जो देखने में अब भी दो लगते हैं। किंतु उनके बीच भी सांस्कृतिक एकता विद्यमान है जो उनकी भिन्नता को कम करती है। दुर्भाग्य की बात है कि हम इस एकता को पूर्ण रूप से समझने में असमर्थ रहे हैं। यह कार्य राजनीति नहीं ,शिक्षा एवं साहित्य द्वारा संपन्न किया जाना चाहिए। इस दिशा में साहित्य के भीतर कितने ही छोटे बड़े प्रयत्न हो चुके हैं वर्तमान पुस्तक ही इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।"[3]

इसके विपरीत बी. आर. अंबेडकर ने अपनी पुस्तक Who were the Shudras में आर्यों को भारत का मूल निवासी प्रमाणित करने का प्रयास किया है। उनके अनुसार प्राचीन काल में शूद्रों को उच्च वर्गों में शामिल किया गया था। परंतु ब्राह्मणों के साथ संघर्ष होने के कारण उन्होंने शूद्रों का उपनयन संस्कार करने से इंकार कर दिया। इसके परिणामस्वरूप उन्हें बड़ी कीमत चुकानी पड़ी तथा सामाजिक व्यवस्था में वैश्यों के पश्चात अंतिम पायदान पर चले गए। पुस्तक के preface में अंबेडकर लिखते हैं—

Two questions are raised in this book—

1. Who were the Shudras

2. How they came to be the fourth varna of the Indo--Aryan society? My answer to them are summarised below: the shudras were one of the Aryan communities of the solar race. There was a time when Aryan society recognised only three varnas namely bramhans, kshatriyas and vaishyas. The sudras did not form a separate Varna. They ranked as part of the kshatriy Verna in the Indo- Aryan society. There was a continuous feud between the shudra kings and Brahmins in which the Brahmins were subjected to many tyrannies and oppressions. As a result of the negligence towards the shudras generated by their tyrannies and oppressions the Brahmins refused to perform the upnayan of the shudras. Owing to the denial of the sudras who were kshatrias became socially degraded fell below the rank of the vaishyas and thus came to form the fourth Varna."[4]

इतिहासकार राम शरण शर्मा ने अपनी पुस्तक में अंबेडकर के विचारों को सिरे से खारिज कर दिया तथा यह स्पष्ट किया कि तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर यह महज शूद्रों को महिमामंडित करने का प्रयास है। प्रामाणिक स्रोतों से इसका कोई सरोकार नहीं है।[5]

एडविन ब्रायंट ने यह स्पष्ट किया है कि अंबेडकर ने शूद्रों की उत्पत्ति की चर्चा की तथा इंडो आर्यन पलायन सिद्धांत का खंडन किया।६ इतिहासकार अरविंद शर्मा भी यह मानते हैं कि आर्यों के आक्रमण के सिद्धांत की ओर अंबेडकर ने इशारा किया था जिसे कालांतर में यूरोपीय विद्वानों ने भी स्वीकार किया।[७]

भूमंडलीकरण के प्रभाव से भाषा भी अछूती नहीं रही है। इस संबंध में हिंदी के मूर्धन्य आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल की उक्ति दृष्टव्य है –

"कविता श्रेष्ठ सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध स्थापित करती है।[8] भूमंडलीकरण ने रचना की पहचान समाप्त कर दी है। उसकी मूल भावनाओं का गला घोंट दिया है। प्रेमचंद की रचनाओं का अध्ययन करने के क्रम में अंग्रेजी शासन से पीड़ित भारत के असहाय किसान- मजदूर की तस्वीर चलचित्र की भांति आंखों के पर्दे पर उतरने लगती है। आज की रचनाओं में वैसी बात नहीं है। हिंदी के स्वच्छंदतावादी कवियों ने भी अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों से प्रभाव ग्रहण किया। परंतु उन्होंने उनके बनाए प्रतीकों को ग्रहण न कर भारतीय जनमानस से उसे ग्रहण किया। हिंदी के स्वच्छंदतावाद कवियों ने भी अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों से प्रभाव ग्रहण किया जिसके कारण उनकी रचनधर्मिता में देशी पन की खुशबू बिखरी पड़ी है। आवश्यकता इस बात की है कि भूमंडलीकरण के प्रभाव को बाजार तक ही सीमित रखा जाए। साहित्य एवं संस्कृति की सीमाओं में घुसपैठ करने की उसे अनुमति नहीं देनी चाहिए। भारतीय संस्कृति अपने आप में संपूर्ण है। जीवन को समुन्नत करने वाले उपादान प्रचुरता से इसमें समाहित हैं। हमें इस संदर्भ में दूसरों से सीखने की आवश्यकता नहीं है। पश्चिम की संस्कृति का अंधानुकरण हमारे लिए आत्मघाती हो सकता है। बेहतर यह होगा कि हम अपनी जडों से जुड़े रहें तथा बाहर की ताजी हवा के लिए थोड़ी गुंजाइश रख छोड़ें।

www.ignited.in

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. तुलसीदास, गोस्वामी, रामचरितमानस, बालकांड, गीता प्रेस, गोरखपुर

2. Thapa, Romila, A History of India, volume 1, penguin, p. 1

3. दिनकर, रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, भूमिका, साहित्य अकादमी, 1956

4. Ambedkar, B. R. (1949). Who Were Shudras, preface, Bombay.

5. Sharma, R.S.: Shudras in ancient India, social History of the Lower Order down to Circa AD 600, New Delhi, Motilal Banarasidas

6. Bryant, Edwin (2001). The Quest for the Origin of the Vedic.

7. Sharma, Arvind (2005). Dr. B. R. Ambedkar on the Aryan invasion and the emergence of the caste system in India, Journal of the American academy of religion, 73, 3, pp. 84.

8. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, कविता क्या है, चिंतामणि, 1939

Corresponding Author

Dr. Arti Kumari*

Associate Professor, Department of Philosophy, B. N. College, TMBU, Bhagalpur